जीनियर्स लि.,
गोवा शिपयार्ड लि.)
आयुध निर्माणी बोर्ड

—एशियन एयरोस्पेस एण्ड डिफेंस एग्जिबिशन, 90—फरवरी, 1990 सिंगापुर में हुई ।

—डिफेंस सर्विस एशिया, 92 प्रदर्शनी—अप्रैल, 1992 में क्वालालामपुर में हुई ।

—इण्टरनेशनल डिफेंस एग्जिबिशन (आईडैक्स–93)—फरवरी, 1992 में आबुधाबी में हुई ।

अर्जुन टैंक का निर्माण

2943. **श्री अनन्त राम जायसवाल :** क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि पिछले 30 वर्ष से भारत में टैंक निर्माण की योजना चालू है और "अर्जुन टैंक' नामक योजना पर लगभग 250 करोड़ रुपये खर्च किये जा चुके हैं, यदि हां, तो 31.12.1992 तक इस संबंध में की गई प्रगति का ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या यह भी सच है कि अर्जुन टैंक के मध्य भाग इंजन, गियर बाक्स, तोप चलाने व निशाना साधने के सारे कल पुर्जे विदेश निर्मित हैं; और

(ग) देश की स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से अब तक टैंकों, लड़ाकू व बम वर्षक विमानों, मैदानी तोप आदि जैसी युद्ध सामग्री के निर्माण के मामलें में पूरी तरह से देश को आत्म-निर्भर बनाने के लिए किये गये प्रयासों का ब्यौरा क्या है, और ये प्रयास कब किये गये तथा इस संबंध में कितनी-कितनी सफलता मिली है ?

रक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री मल्लिकार्जुन) : (क) यद्यपि देश म टक का लाइसेंस के अंतर्गत उत्पादन का कार्य वर्ष 1965 के आस-पास शुरू किया गया था परन्तु मुख्य युद्धक टैंक "अर्जुन" पहली परियोजना है जो अत्याधुनिक मुख्य युद्धक टैंक के विकास के लिए आरम्भ की गई है । अब तक इस परियोजना पर लगभग 245 करोड़ रुपए खर्च किए गए हैं। अर्जुन टैंकों की दो उत्पादन-पूर्व श्रृंखलाएं पूरी कर ली गई हैं और इनके कड़े चल परीक्षण व हथियार प्रणाली फायरिंग परीक्षण कर लिए गए हैं। 1992 के उत्तरार्ध में बालासोर में किए गए अद्यतन मूल्यांकन के बहुत उत्साहवर्धक परिणाम निकले हैं। तबसे जनवरी/फरवरी, 1993 के दौरान अर्जुन टैंक के और परीक्षण किए गए हैं और इसके अच्छे परिणाम निकले हैं ।

(ख) पावर पैक, जिसमें इंजन और गियर बाक्स, तोप नियंत्रण प्रणाली तथा गनर मेन साइट भी शामिल हैं, विदेश से खरीदे गए हैं।

(ग) टैंक : विजयन्त टैंक और टी-72 टैंक का लाइसेंस के अंतर्गत उत्पादन क्रमश: वर्ष 1965 और 1982 में किया गया था। इन प्रयासों के परिणामत: आधुनिक मुख्य युद्धक टैंक के उत्पादन के लिए विशेषज्ञता और आधारभूत सुविधाएं स्थापित कर ली गई हैं। मुख्य युद्धक टैंक "अर्जुन' का देश में विकास और उत्पादन किए जाने से इस क्षेत्र में आत्म-निर्भरता प्राप्त होने की संभावना है।

वायुयान : वायुयानों का लाइसेंस के अंतर्गत उत्पादन 1950 के प्रारम्भ में शुरू किया गया था। तबसे विभिन्न किस्म के लड़ाकू/बम वर्षक वायुयान का लाइसेंस के अंतर्गत निर्माण किया गया है। इनमें वैम्पायर्स, नैट, जगुआर और मिग श्रेणी के युद्धक वायुयान शामिल हैं। हल्के किस्म के अत्याधुनिक युद्धक वायुयान का विकास, जो 1983 से प्रगति पर है, किए जाने से इस क्षेत्र में आत्म-निर्भरता प्राप्त होन की संभावना है।

फील्ड तोप : फील्ड तोप का देश में लाइसेंस के अंतर्गत विकास और उत्पादन का काम 1960 के प्रारंभ में शुरू किया गया था और विभिन्न किस्म की फील्ड तोपों, पैंक-हाविटजर, अधिक क्षमता वाली मोटरों, ग्रेड राकेटों तथा विविध तोपों/मोर्टारों के गोलाबारूद का देश म विकास और उत्पादन किया गया है। परिणामत: इन क्षेत्रों में काफी हद तक आत्म-निर्भरता प्राप्त कर ली गई है।